कार्यशाला
तिमाही रिपोर्ट की अनिवार्यता
तिथि-03 नवम्बर 2020

प्रस्तुत कर्ता

हिन्दी प्रकोष्ठ

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

रोनो हिल्स, दोईमुख-791112

अरुणाचल प्रदेश (भारत)

तिमाही रिपोर्ट की अनिवार्यता पर एक दिवसीय कार्यशाला

1. आयोजन कर्ता

हिन्दी प्रकोष्ठ, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, दोईमुख, अरुणाचल प्रदेश (एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

2. उद्देश्य

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय में हिन्दी में हुई प्रगति से संबंधित रिपोर्ट तैयार करने के लिए जो तिमाही रिपोर्ट प्रपत्र विभागों/शाखाओं/प्रकोष्ठों /संस्थानों से प्राप्त करते हैं, उनमें कई प्रकार की त्रुटियां पाई जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए यह कार्यशाला आयोजित किया गया।

3. सारांश

हिन्दी प्रकोष्ठ को प्रत्येक तिमाह के दौरान विश्वविद्यालय में राजभाषा में हो रहे कार्यों का रिपोर्ट गृह मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं शिक्षा मंत्रालय को जमा करना होता है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों/शाखाओं/प्रकोष्ठों /संस्थानों से प्राप्त आँकड़ों से ही विश्वविद्यालय का तिमाही रिपोर्ट तैयार किया जाता है। कार्यशाला में सरकारी काम-काज में प्रयुक्त हिन्दी के बारे में जानकारी दी गई। विशेषज्ञ के रूप में गुम्पी डूसो, हिन्दी अधिकारी ने प्रतिभागियों को राजभाषा नियमों के बारे में तथा तिमाही रिपोर्ट के महत्व पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। इन प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी कार्यक्रम के अंत में दिए गए।

प्रस्तावना

भाग-1

1. आयोजन कर्ता संस्थान

भारत के उत्तर पूर्व राज्यों में से एक अरुणाचल प्रदेश राज्य है। राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स दोईमुख इस राज्य का एक मात्र विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु "तिमाही रिपोर्ट की अनिवार्यता" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

2. पृष्ठभूमि

प्रकोष्ठ द्वारा राजभाषा नियमानुसार प्रत्येक तिमाह के दौरान एक कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही रिपोर्ट को प्रकोष्ठ द्वारा गृह मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं शिक्षा मंत्रालय को भेजना होता है।

3. उद्देश्य

केन्द्र सरकार के द्वारा संचालित कार्यालय होने के नाते सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु यह कार्यशाला आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में तिमाह के दौरान भरे जाने वाले तिमाही रिपोर्ट में सही प्रकार से आँकड़ों को दर्ज करने हेतु कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया।

4. अपेक्षित परिणाम

राजभाषा नियम अनुसार केन्द्र सरकार के कार्यालयों में जारी होने वाले दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में तैयार किए जाने एवं हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में देना सुनिश्चित करने हेतु विभागों/शाखाओं/प्रकोष्ठों /संस्थानों के लिपिक एवं निजी सहायकों को प्रशिक्षित किया गया। जिसमें कर्मियों की भागीदारी सराहनीय रही।

5. **विषय-वस्तु**

सरकारी काम-काज में भी अधिक से अधिक राजभाषा के प्रयोग एवं तिमाही रिपोर्ट को सही प्रकार से भरे जाने एवं उसके रिकार्ड ठीक प्रकार से तैयार किए जाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कार्यशाला का आयोजन किया गया।

6. **संसाधक/वक्ता**

इस कार्यशाली की संसाधक श्रीमती गुम्पी डूसो, हिन्दी अधिकारी रहीं। उन्होंने प्रतिभागियों को तिमाही रिपोर्ट से संबंधित जानकारी देते हुए कर्मियों को राजभाषा नियम का अनुपालन करने हेतु परामर्श दिया।

7. **लक्षीत प्रतिभागी वर्ग**

इस कार्यशाला को विश्वविद्यालय के आशुलिपिक, लिपिक एवं विभागों के निजी सहायकों द्वारा तिमाही रिपोर्ट को बेहतर प्रकार से भरने तथा परिपत्र, आदेश, सूचना, अधिसूचना, संकल्प, कार्यालय-ज्ञापन आदि को द्विभाषी रूप से तैयार करने को प्रोत्साहित करने हेतु किया गया।

8. **बजट**

एक दिन के इस कार्यक्रम हेतु विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी प्रकोष्ठ को कुल 13,000/-रूपए का बजट अनुमोदित किया गया।

9. कार्यप्रणाली

प्रकोष्ठ ने कोरोना आपदा को ध्यान में रखते हुए सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए कार्यशाला संचालित किया। दोनो सत्रों में प्रतिभागियों की उपस्थिति अच्छी रही।

भाग-2 सत्र अनुसार विवरण

हिन्दी प्रकोष्ठ , राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश द्वारा कार्यशाला का आयोजन दिनांक 3 नवम्बर 2020, मंगलवार को किया गया। इस कार्यशाला का आरंभ श्रीमती गुम्पी डूसो, हिन्दी अधिकारी, आर.जी.यू के अभिवादन से हुआ। प्रथम सत्र के दौरान विभागों के निजी सहायकों ने कार्यशाला में भाग लिया। संसाधक के रूप में आरंभिक टिप्पणी देते हुए गुम्पी डूसो, हिन्दी अधिकारी, आर.जी.यू ने प्रशासनिक कार्यों में तिमाही रिपोर्ट की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने प्रशासनिक टिप्पणी में सरल एवं सटीक शब्दों के प्रयोग पर जोर दिया। उन्होंने राजभाषा के प्रयोग के संदर्भ में केन्द्र सरकार के कर्मी की भूमिका पर विवरण दिया। इसके उपरांत श्रीमती मिली रानी पाल, हिन्दी अनुवादिका, ने तिमाही रिपोर्ट के आँकड़ों को सही प्रकार से रखने पर विवरण दिया। कार्यशाला का समापन्न ताचा निडी, हिन्दी टंकक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों से प्रतिपुष्टि भी प्राप्त की गई। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिया गया।

कार्यशाला के दौरान विभाग/शाखा/प्रकोष्ठ/संस्थान जिनसे प्रतिभागियों ने भाग लिया उनका विवरण निम्न है-

1. राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन
2. इलेक्ट्रानिक्स व कंप्यूटर अभियांत्रिकी विभाग
3. आई.क्यू.ए.सी.
4. संयुक्त कुलसचिव,शैक्षणिक
5. कंप्यूटर विज्ञान व अभियांत्रिकी विभाग
6. वनस्पति विभाग
7. भूगोल विभाग
8. जन संचार विभाग
9. अरुणाचल जनजातीय अध्ययन संस्थान
10. दूरस्थ शिक्षा संस्थान
11. वाणिज्य विभाग
12. शिक्षा विभाग
13. गणित विभाग
14. रसायन विज्ञान विभाग
15. ललित कला व संगीत विभाग
16. राजनीति विज्ञान विभाग
17. अर्थशास्त्र विभाग
18. इतिहास विभाग
19. मानव विज्ञान विभाग
20. समाजकार्य विभाग
21. समाजशास्त्र विभाग
22. वाहन शाखा
23. पंजीकरण शाखा
24. वित्त अधिकारी कार्यालय

25. यू.जी.सी. परियोजना प्रकोष्ठ
26. स्थापना शाखा (शैक्षणिक)
27. स्थापना शाखा (गैर-शैक्षणिक)
28. परीक्षा शाखा
29. पुस्तकालय
30. भंडार शाखा
31. संपदा अधिकारी कार्यालय
32. वित्त लेखा शाखा
33. विकास शाखा

कार्यशाला के दौरान विभाग/शाखा/प्रकोष्ठ/संस्थान जिनसे प्रतिभागियों ने भाग नहीं लिया उनका विवरण निम्न है-

1. अंग्रेजी विभाग
2. हिन्दी विभाग
3. शारीरिक शिक्षा विभाग
4. मनोविज्ञान विभाग
5. प्रबंधन विभाग
6. भूविज्ञान विभाग
7. प्राणीशास्त्र विभाग
8. भौतिकी विज्ञान विभाग
9. कार्यपालक अभियंता कार्यालय
10. कुलपति कार्यालय
11. परीक्षा नियंत्रक कार्यालय
12. सम-कुलपति कार्यालय
13. कुलसचिव कार्यालय

भाग- 3 मुख्य पक्ष

क) कार्यालय संदर्भ

कार्यशआला का आयोजन विश्वविद्यालय में कार्यरत कर्मियों के दैनिक कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा प्रशासनिक कार्यों में तिमाही रिपोर्ट की भूमिका पर जानकारी प्रदान करना था। इसी क्रम में कार्यशाला के दौरान कर्मियों को द्विभाषी परिपत्र, आदेश, कार्यालय ज्ञापन, सूचना, पत्र लेखन, टिप्पणी लेखन आदि का प्रारूप समक्षाया गया। कर्मियों को जानकारी दी गई की केन्द्र सरकार के कर्मी होने के नाते सभी को राजभाषा का अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए।

भाग-4 संलग्न

कार्यशाला रिपोर्ट क्षेत्रीय समाचार पत्र में प्रकाशन किया गया।

196

प्रेस विज्ञप्ति

हिन्दी प्रकोष्ठ, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय द्वारा "तिमाही रिपोर्ट की अनिवार्यता" पर एक दिवसीय कार्यशाला मंगलवार, 3 नवम्बर 2020 को आयोजित की गई। आरंभिक टिप्पणी देते हुए गुम्पी डूसो, हिन्दी अधिकारी, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय ने संसाधक के रूप में प्रशासनिक कार्यों में तिमाही रिपोर्ट की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने प्रशासनिक टिप्पणियों में सरल एवं सटीक शब्दों के प्रयोग पर जोर दिया। उन्होंने राजभाषा के प्रयोग के संदर्भ में केन्द्र सरकार के कर्मी की भूमिका पर विवरण दिया।

कार्यशाला को विशेष रूप से विभागों के निजी सहायकों एवं प्रशासनिक कर्मियों के लिए दो सत्रों में सम्पन्न किया गया। प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों को संसाधक द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

हिन्दी प्रकोष्ठ की कर्मी मिली रानी पाल, हिन्दी अनुवादिका ने तिमाही रिपोर्ट के आँकड़ों को सही प्रकार से रखने पर विवरण दिया।

कार्यशाला का समापन ताचा निडी, हिन्दी टंकक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

ऊर्जा

जीवन में गुरु की आवश्यकता

एक गाय घास चरने के लिए एक जंगल में चली गई। शाम ढलने के करीब थी। उसने देखा कि एक बाघ उसकी तरफ दबे पांव बढ़ रहा है। वह डर के मारे इधर-उधर भागने लगी। वह बाघ भी उसके पीछे दौड़ने लगा। दौड़ते हुए गाय को सामने एक तालाब दिखाई दिया। घबराई हुई गाय उस तालाब के अंदर घुस गई। वह बाघ भी उसका पीछा करते हुए तालाब के अंदर घुस गया। तब उन्होंने देखा कि वह तालाब बहुत गहरा नहीं था। उसमें पानी कम था और वह कीचड़ से भरा हुआ था। उन दोनों के बीच की दूरी काफी कम हुई थी। लेकिन अब वह कुछ नहीं कर पा रहे थे।

आनंदाचारी,
सनातन धर्म मंदिर
'भक्त-भारती'

वह गाय उस किचड़ के अंदर धीरे-धीरे धंसने लगी। वह बाघ भी उसके पास होते हुए भी उसे पकड़ नहीं सका। वह भी धीरे-धीरे कीचड़ के अंदर धंसने लगा। दोनों भी करीब करीब गले तक उस कीचड़ के अंदर फस गए। दोनों हिल भी नहीं पा रहे थे। गाय के करीब होने के बावजूद वह बाघ उसे पकड़ नहीं पा रहा था। थोड़ी देर बाद गाय ने उस बाघ से पूछा, क्या तुम्हारा कोई गुरु या मालिक है? बाघ ने गुर्राते हुए कहा, मैं तो जंगल का राजा हूं। मेरा कोई मालिक नहीं। मैं खुद ही जंगल का मालिक हूं। गाय ने कहा, लेकिन तुम्हारे उस शक्ति का यहां पर क्या उपयोग है? उस बाघ ने कहा, तुम भी तो फंस गई हो और मरने के करीब हो। तुम्हारी भी तो हालत मेरे जैसी है। गाय ने मुस्कुराते हुए कहा, बिलकुल नहीं। मेरा मालिक जब शाम को घर आएगा और मुझे वहां पर नहीं पाएगा तो वह ढूंढते हुए यहां जरूर आएगा और मुझे इस कीचड़ से निकाल कर अपने घर ले जाएगा। तुम्हें कौन ले जाएगा?

थोड़ी ही देर में सच में ही एक आदमी वहां पर आया और गाय को कीचड़ से निकालकर अपने घर ले गया। जाते समय गाय और उसका मालिक दोनों एक दूसरे की तरफ कृतज्ञता पूर्वक देख रहे थे। वे चाहते हुए भी उस बाघ को कीचड़ से नहीं निकाल सकते थे क्योंकि उनकी जान के लिए वह खतरा था। गाय समर्पित हृदय का प्रतीक है। बाघ अहंकारी मन है और मालिक सद्गुरु का प्रतीक है। कीचड़ यह संसार है। और यह संघर्ष अस्तित्व की लड़ाई है। किसी पर निर्भर नहीं होना अच्छी बात है लेकिन उसकी अति नहीं होनी चाहिए। आपको किसी मित्र, किसी गुरु, किसी सहयोगी की हमेशा ही जरूरत होती है।

तारीख़-ए-इतिहास

1-दिसंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

1640 में स्पेनिश शासन के 60 वर्षों के बाद पुर्तगाल को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।
1742 में महारानी एलिजाबेथ ने रूस से सभी यहूदियों को निकालने का आदेश दिया।
1878 में वाइट हाउस में पहला टेलीफ़ोन लगाया गया था।
1919 में लेडी नेन्सी एस्टर ने पहली महिला सदस्य के रूप में ब्रिटिश संसद की शपथ ग्रहण की।
1933 में भारत में कोलकाता और ढाका के बीच पहले यात्री विमान सेवा की शुरुआत हुई।
1954 में प्रसिद्ध समाजसेविका और नर्मदा बचाओ आंदोलन की संस्थापक सदस्य मेधा पाटकर का जन्म हुआ था।
1955 में अश्वेत महिला रोसा पार्क ने एक श्वेत सहयात्री के लिए सीट खाली करने से इंकार किया।
1963 में नागालैंड भारत का 16वां राज्य बना था ।
1976 में बांग्लादेश के जनरल जियाउर रहमान खुद को राष्ट्रपति घोषित कर लेते है।
1977 में सबसे पहला बच्चों के लिए केबल चैनल "द पिनविड्ल नेटवर्क" (जिसे बाद में निकेलोडीयन कहा गया) शुरू किया गया।
1984 में फ्रांस द्वारा परमाणु परिक्षण हुआ था ।
1988 में विश्व ऐडस दिवस की शुरूआत हुई थी।
1994 में अर्नेस्टों जेडिलो ने मेक्सिको के राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार संभाला था।

उज्ज्वल सिंह
शोधार्थी

ज्ञान

राष्ट्रीय किसान दिवस : इस दिवस को 2001 से भारत के पांचवें प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के सम्मान में प्रत्येक वर्ष 23 दिसंबर को मनाया जाता है। उन्होंने अपने कार्यकाल में किसान के हितों की रक्षा के लिए अनेक नीतियां बनाई। तथा कृषकों के जीवन को सुधारने, उनकी समस्या और समाधान से संबंधित अनेक पुस्तकें लिखीं।

नीति आयोग : यह भारत सरकार द्वारा 1 जनवरी 2015 को गठित नवीन संस्थान है, जिसने योजना आयोग का स्थान लिया है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर केंद्र एवं राज्य सरकारों को रणनीतिक एवं तकनीकी परामर्श देना है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाला इस आयोग का कार्य सरकारों के 'थिंक टैंक' के रूप में करना है।

सरस्वती सम्मान : यह भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट कृति के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार है। यह सम्मान के. के. बिड़ला फाउंडेशन के द्वारा प्रत्येक वर्ष 1991 से दिया जा रहा है। पहला सरस्वती सम्मान हिंदी के साहित्यकार हरिवंश राय बच्चन को उनकी आत्मकथा के लिए दिया गया था।

दक्षेस/सार्क : इसका पूरा नाम 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन' है। इसकी स्थापना 8 दिसंबर 1985 में की गई। इसमें शामिल 8 देश भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव और अफगानिस्तान हैं। इसका मुख्यालय काठमांडू में स्थित है।

मैथिलीशरण गुप्त : हिंदी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली हिंदी के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इनका जन्म 3 अगस्त 1886 को चिरगांव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। 'भारत भारती', 'पंचवटी', 'साकेत', 'यशोधरा' आदि इनकी महत्वपूर्ण कृतियां हैं। इन्हें 1954 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

प्रेमचंद की 'रंगभूमि'

Contd. from page 6...

कर देती है। यह आर्थिक लाभ के लिए पूँजीपतियों का किसी भी हद तक जाना ही दर्शाता है। डॉ. इंद्रनाथ मदन लिखते हैं, लेखक का विरोध 'रंगभूमि' में उस पूंजीपति एवं सामंती वर्ग से है जिसने आपस के सहयोग पर आधारित गाँव की व्यवस्था को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। वस्तुतः क्लार्क द्वारा सोफिया के कहने पर सूरदास की ज़मीन हड़पने के फैसले को वापस लेना एवं इसके बाद राजा महेंद्र कुमार, जॉनसेवक, रानी जाह्नवी, भरत सिंह आदि के विरोध करने पर क्लार्क का तबादला एवं सूरदास की जमीन हड़प लेने की घटना इस बात को दर्शाता है।

'रंगभूमि' में प्रेमचंद ने तत्कालीन धार्मिक एवं स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को भी स्पष्ट किया है। जॉनसेवक कट्टर ईसाई होने की वजह से सोफिया पर भी धर्म को थोपता है मगर सोफिया मानव धर्म को मानती है और दिखावे के लिए चर्च जाना उसे स्वीकार नहीं। दूसरी तरफ कट्टर ईसाई होने पर भी जॉनसेवक स्वार्थ के लिए सभी धर्मों के लोगों से मेलजोल रखता है। लेखक ने भरत सिंह, ताहिर अली, जॉनसेवक आदि तीन अलग-अलग धर्मों के कथा को दिखाकर धर्म के लिए व्यर्थ लड़ने वाली मानसिकता को उजागर किया है। दूसरी तरफ सुभागी के शोषण के विरुद्ध सूरदास संघर्ष करता दिखाई देता है जिससे स्त्रियों की स्थिति का पता चलता है।

दलितों का अपनी ज़मीन के लिए संघर्ष करना तत्कालीन समय का एक बड़ा सच था जिसे स्वाधीनता आंदोलन ने उपेक्षित कर दिया था। प्रेमचंद संभवतः पहले लेखक हैं जिन्होंने एक दलित के ज़मीन के लिए संघर्ष को दर्शाया है। किसी आलोचक ने कहा है कि प्रेमचंद के किसान पात्र शोषित होते हैं मगर दलित पात्र लड़ते हैं। 'रंगभूमि' में भी सूरदास अपनी मृत्यु तक अपना संघर्ष जारी रखता है। उसकी अन्त्येष्टि में सभी वर्गों का एक साथ बैठकर खाना उस समय के लिए एक क्रांतिकारी विचार है। अतः पूंजीवादी स्वार्थों के लिए गरीब किसानों, लोगों का ज़मीन छीनना, उन्हें दर-दर भटकने, अपनी स्वतन्त्रता खोने के लिए मजबूर करना, उचित मुआवजा न देना आदि उस समय की भयानक समस्या थी जो आज भी बनी हुई है और यही बात इस उपन्यास को पठनीय बनाती है। आज भी भूमि अधिग्रहण बिल 'रंगभूमि' के जॉनसेवक एवं सामंतों की हड़प नीति की याद दिलाती है। 'रंगभूमि' पूंजीवाद, सामंतवाद एवं अंग्रेजों की मिली-भगत एवं भारतीयों के खंडित संघर्ष को रेखांकित करती है। अपनी संपूर्णतः में यह उपन्यास पूंजीवाद, साम्राज्यवाद एवं सामंतवाद के तिहरी गठजोड़ एवं शक्ति के खिलाफ आमजन की संघर्ष की कथा है और हिन्दी साहित्य के रत्नों में शामिल है।

Growth of Internatinal Human Rights Organisation...

Contd. from Page 2...

was created with a vision 2020 but due to the Pandemic of Covid 19, major steps could not be taken out. The IHRO Arunachal Chapter has committed to make their work viable in making Arunachal a green area and to make it pollution free. a In this regards they have decided to start a movements called Green Arunachal by Planting trees. So to initiate this Green Arunachal Movement it was decided to start the initiative from West Siang District by Planting 1 Lakh trees all over the area. And along with this they are rigorously raising their voices to protect the wild animals and birds and are planning to approach the competent authority for banning guns which are used for hunting wind animals and birth.They have also decided to sponsor 100 poor students of Aruncahal Pradesh by providing necessary and required items like books, clothes and other necessities as a part of creating awareness in Education Sector, with a mission for quality education. Right to education is a universal Entitlement to Education and it forms the foundation of the lives of children. One of the most hindrances in human civilization is the rampant corruption.

Corruption is an enormous obstacle to realization of all human rights, civil, political, economic, socio-cultural development etc. It violates the core human rights principal of transparency and accountability. Corruption exists in all sectors in our state in spite of the announcement made by the present state government to uproot the diseases of corruption from the society. It is seen that still the percentage system in the form of taking bribe by all executing agency are still going on and taking bribe by the officials, the embezzlement of public funds from top level and illegal appointment in Government Survive are still rampant in our state, So the IHRO is working in this fields to minimize such rampant corruption. The Team has already got one police officer suspended for taking gratification and is committed to do more in these fields. From coming years efforts will be made by filing RTI and filing of Public Interest litigations to create awareness and to minimize the corruption in the state which affects human rights directly and indirectly. Now everybody is aware of corruption but none is raising the issue. Due to rampant corruption the right to have a good life is threatened, and violated. Right to Health is denied, Right to Education is violated, and therefore it needs to stop.

Violation of human rights creates many economic and emotional problems. It affects the nature and welfare of human beings and creates disorders. Therefore the IHRO Arunachal Chapter has taken up all the related issues through the practical implementation along with considering the rights that accorded since by birth as human rights. Their appeal to all sections of society with right approach will be always in the top agenda as a part of their contribution to society for realizing the human values and human rights. Their works are guided by the principal of honesty and transparency under the direction from the IHRO Headquarter at New Delhi. And it is seen that the IHRO is working tremendously in Practical way all over the India and abroad for protection of human rights and many intellectuals and legal luminaries and retired judges are the part of this organization.Therefore lastly our Humble appeal to the readers of this Small write-up to come together and let's work together and work for peace and development of our State by extending helping hand with each other with meaningful practical work so that we can protect our values and basic Human rights.